Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 7759198

Roll No. 23261028043
Total Mark 58/75.00

Exam BACHELOR OF ARTS_DEC-2023
Subject A080101T - PRINCIPLE OF MICRO ECONOMICS

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	4/5						
1B	4/5						
1C	4/5						
1D	4/5						
1E	3.5/5						
1F	3.5/5						
1G	3.5/5						
1H	3.5/5						
1I	4/5						
2	12/15						
3	0/15						
4	0/15						
5	0/15						
6	0/15						
7	0/15						
8	12/15						
9	0/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

PART-I

Date of Exam: 16/12/23 Shift: 1st Room No.: 34
Paper Code: A080101T Subject: Economics Year/Sem: 1/1st
Name of Candidate: Devansh Pandey
Roll No.: 2 3 2 6 1 0 2 8 0 4 3
Signature of Candidate: Devansh Pandey
Signature of Invigilator
COE Facsimile

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures | Max. Marks
Total Marks in Words

A080101T
Paper Code

Signature of Evaluator

PART-III

Course: BA - Ist Sem
Session: 2023-24 Year/Semester: 1/1st
Subject Name: Principal of micro economics
Medium: English ○ Hindi ●

Paper Code: A 0 8 0 1 0 1 T
Exam Date: 1 6 1 2 2 0 2 3
Name of Candidate: DEVANSH PANDEY
Father's Name: SATYAPRAKASH

महाविद्यालय का कोड
College Code: K N 0 4

परीक्षा केन्द्र का कोड
Exam Centre Code: K N 0 4

परीक्षा का प्रकार
Type of Exam
संस्थागत Regular ● भूतपूर्व परीक्षार्थी Ex- Student ○
व्यक्तिगत Private ○ बैक पेपर परीक्षा Back Paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.
7759198

A080101T
Paper Code

नामांकन संख्या
Enrollment Number: C S J M A 2 3 0 0 0 1 0 4 5 1 7

PART-IV

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2 3 2 6 1 0 2 8 0 4 3

पेपर कोड Paper Code: A 0 8 0 1 0 1 T

Devansh Pandey
Signature of Candidate

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट : 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पत्र के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. ओ.एम.आर. में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ काली स्याही से स्पष्ट की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जाये।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below, blacken the circles completely.

Correct Method: ① ● ③ ④ Incorrect Method: ✓ ✗ ◉ ⓪

4. Make no Stray marks on this sheet.

5. DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.

IN ORDER TO AVOD UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/electronic/digital/ watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु :

1. उत्तर पुस्तिका के निर्धारित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखें तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ छाड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, डिजिटल घड़ी, कॉपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती हैं। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लेस साइंटिफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमति होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में करेंसी न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र ID सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1-24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने से पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसको परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई सुनवाई नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. बी कॉपी या अतिरिक्त शीट नही दिया जायेगा।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-24) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, Su[bject] Name, and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex- Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

	1	8	1	5	4	3	2	1	6	9
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
1	●	1	●	1	1	1	1	●	1	1
2	2	2	2	2	2	2	●	2	2	2
3	3	3	3	3	3	●	3	3	3	3
4	4	4	4	4	●	4	4	4	4	4
5	5	5	5	●	5	5	5	5	5	5
6	6	6	6	6	6	6	6	6	●	6
7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7
8	8	●	8	8	8	8	8	8	8	8
9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	●

Note- If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns .

Paper Code A08010017

खण्ड - 'अ'

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 1 (a)

माँग:- किसी वस्तु की इच्छा रखने का अर्थ माँग नहीं होता है बल्कि उसके लिए निम्न शर्तें आवश्यक होती हैं-

वस्तु की इच्छा करना।
वस्तु खरीदने के लिए धन देने योग्य होना।
वस्तु से पूर्णतः संतुष्टि प्राप्त होना।

इन तीन शर्तों के पूरा होने पर ही कोई इच्छा माँग कहलाती है। इसे कई तत्त्व से जो प्रभावित करते हैं।

प्रभावित करने वाले तत्व -

1) **वस्तु की कीमत**:- यदि वस्तु की कीमत अधिक होती है तो उसकी माँग कम होती है जबकि इसके विपरीत यदि वस्तु की कीमत कम होती है तो उसकी माँग अधिक होती है इसे माँग का नियम भी कहते हैं।

2) **उपभोक्ता की आय**:- उपभोक्ता की आय यदि अधिक होगी तो माँग भी अधिक होगी जब आय कम होगी तो माँग भी कम होगी।

3) **संबंधी वस्तु की कीमत**:- यदि किसी संबंधी वस्तु की कीमत में परिवर्तन होता है तो उस वस्तु की माँग में भी परिवर्तन होगा।

4) **प्रौद्योगिकी**:- यदि प्रौद्योगिकी में परिवर्तन होगा तो वस्तु अच्छी या खराब गुणों वाली होगी। जिससे इसके माँग में परिवर्तन होगा।

Do Not Write anything in this Portion

5) फैशन :- जब कोई वस्तु चलन में होती है तो उसकी मांग भी ज्यादा होती है।

प्रश्नोत्तर क्र[illegible] 1(b)

क्रमागत उत्पत्ति ह्रास नियम

क्रमागत उत्पत्ति ह्रास नियम किसी वस्तु के उत्पादन से संबंधित होता है। इसे परिवर्तनशील अनुपात का नियम भी कहते हैं। इस नियम के अनुसार- (उत्पत्ति)

"यदि उत्पत्ति के क्रमागत बढ़ाए रखा जाए या उत्पत्ति क्रमागत रूप से की जाए होने वाली उत्पत्ति में कमी आती जाती है। इसे क्रमागत उत्पत्ति ह्रास नियम कहते हैं।

जहाँ पर कुल उत्पत्ति अधिकतम होती है वहीं पर सीमांत उत्पत्ति न्यूनतम होती चली जाती है।

मान्यताएँ :- इस नियम के लिए [illegible]लिखित मान्यताएँ लागू होती [illegible]।

① उत्पादक को उत्पत्ति से [illegible] वाली आय समान होनी चाहिए।
② उत्पादन की वस्तु अच्छी गुणवत्ता की होनी चाहिए।
③ कुल उत्पत्ति अधिकतम होती है।
④ वस्तु के उत्पादन के लिए मिलने वाला कच्चा माल आसानी से उपस्थित या मिल सके।
⑤ वस्तु की कीमत में कोई अधिक परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1(c)

उपयोगिता

जब हम किसी वस्तु को खरीदते हैं तो उससे हमे कुछ संतुष्टि प्राप्त होती है अर्थात "किसी वस्तु को क्रय करने पर उससे प्राप्त होने वाली संतुष्टि ही उपयोगिता कहलाती है।"

सीमांत उपयोगिता :- जब किसी वस्तु को उपयोग करते समय उससे एक अधिक वस्तु का उपयोग करने लगे तब उससे एक अधिक वस्तु के कारण मिलने वाली अतिरिक्त संतुष्टि सीमांत उपयोगिता कहलाती है।

कुल उपयोगिता :- जब हम किसी वस्तु का क्रमागत रूप से उपयोग करते जाते हैं तो उससे हमें संतुष्टि प्राप्त होती है। यह प्राप्त संतुष्टि को कुल उपयोगिता कहते हैं। इसे TU से प्रदर्शित करते हैं।

संबंध :- जहाँ पर सीमांत उपयोगिता न्यूनतम स्तर पर होती है वहाँ पर कुल उपयोगिता अधिकतम होती है।

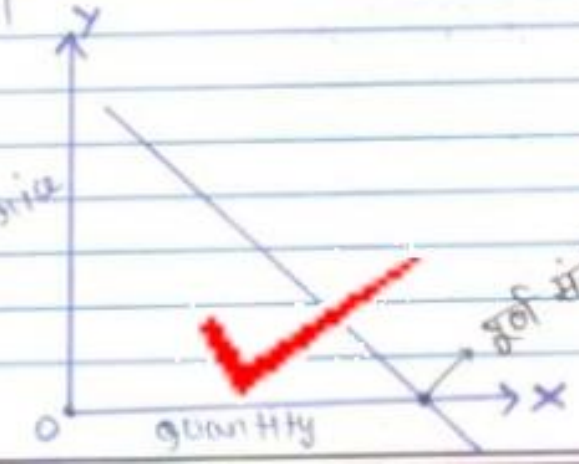

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code
A 0 8 0 1 0 1 T

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1(d)

अल्पकाल में उत्पादन के समय उत्पत्ति के साधनो में कोई परिवर्तन नहीं होता है। इसमें उत्पादन के लिए जो साधन लगाए जाते हैं उनसे वस्तु का निर्माण होता है और इसे लागत कहते हैं। ये निम्न लागते उत्पादन लागत में आती हैं।

1) **मौद्रिक लागत** :- किसी वस्तु के उत्पादन में मुद्रा के रूप में जो लागत लगायी जाती है वह मौद्रिक लागत कहलाती है। इसमें तीन लागते हैं-

1) **स्पष्ट लागतें** ⇒ व्यक्ति या उत्पादक जो सामान बाहर से क्रय करे वो स्पष्ट लागते होती हैं।

2) **अस्पष्ट लागतें** ⇒ साहसी द्वारा स्वयं के जीवन से संबंधी लगायी गयी लागतें।

3) **सामान्य लाभ** ⇒ जो साहसी अपने सामान्य लाभ के लागते लगाता है।

2) **वास्तविक लागत** ⇒ वास्तविक लागत से तात्पर्य वह लागत से है जो मनुष्य श्रम के रूप में लगाता है। इसमें सामाजिक लोग भी वस्तु के उत्पादन में मदद करते हैं।

3) **अवसर लागत** ⇒ जब किसी वस्तु का उत्पादन किया जाता है जो उसके उत्पादन के कई विकल्प होते हैं एक विकल्प को त्यागकर उच्च कोटि के उत्पादन का प्रयोग करता है यह त्यागा गया अवसर ही अवसरलागत कहलाता है।

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 1(c)

पूर्ण प्रतियोगिता:- पूर्ण प्रतियोगिता में बहुत सारे क्रेता तथा बहुत सारे विक्रेता होते हैं अर्थात बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता तब सम्भव होती है, जब बाजार में उत्पादित वस्तु को कई सारे बेचने वाले लोग तथा कई सारे खरीदने वाले लोग होते हैं इस पूर्ण प्रतियोगिता में जो क्रेता होता उसे बाजार का पूर्ण ज्ञान होता है।

विशेषताएं:- पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताएं निम्न-लिखित हैं-

1) पूर्ण प्रतियोगिता में बहुत सारे क्रेता तथा बहुत सारे विक्रेता होते हैं
2) इस बाजार में वस्तु की कीमत स्थिर होती है।
3) पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत क्रेता को बाजार का पूर्ण ज्ञात होता है।
4) सभी वस्तुएं समान गुणधर्म की होती हैं
5) पूर्ण प्रतियोगिता को यदि वास्तविक दृष्टिकोण से देखे तो यह काल्पनिक होती है।

ग्राफ:-

Paper Code A08 01 01 7

Do Not Write anything in this Portion

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1 (f)

कीमत विभेद

कीमत विभेद से तात्पर्य ऐसे विभेद से जिसमें कोई विक्रेता विभिन्न क्रेताओं को अलग-अलग मूल्यों पर एक ही वस्तु को बेचने लगता है

उदाहरण :- एक विक्रेता जो कि किसी वस्तु जैसे जूस को A व्यक्ति को 30 र का गलास तथा B व्यक्ति को 20 र का ग्लास बेचता है तो दोनो मे रूपयो मे अंतर 10 र का है। अतः वह A व्यक्ति के साथ जूस की कीमत पर 10 र ज्यादा लेता है। यह कीमत विभेद कहलाता है।

कीमत विभेद के कारक :-

1) श्रेणी :- यदि कोई व्यक्ति किसी ट्रेन की AC डिब्बा से जाता है तो उसे अधिक कीमत देनी पड़ती है जबकि सामान्य डिब्बे से जाने पर वह कम कीमत देता है।

2) समय :- समय का भी प्रभाव होता है यदि कोई व्यक्ति दिन मे सामान लेता है और रात मे सामान लेता है तो उसे कीमत विभेद सहना पड़ता है।

3) स्तर :- कुछ वकील ऐसे होते है जो गरीब व्यक्तियों से कम रूपये लेते केस लड़ने के जबकि अमीर व्यक्तियों से अधिक लेते है।

Paper Code
A 0 8 0 1 0 1 7

7

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1 (g)

वाह्यताएँ

वाह्यताएँ एक प्रकार के प्रभाव से संबंधित होता है जब किसी वस्तु का उत्पादन किया जाता है। तो उसके उत्पादन से तीसरे व्यक्ति पर जो प्रभाव पड़ता है। उसे वाह्यताएँ कहते हैं- यह दो प्रकार की होती हैं -

① धनात्मक वाह्यताएँ
② ऋणात्मक वाह्यताएँ

① **धनात्मक वाह्यताएं :-** किसी वस्तु के उत्पादन से तीसरे व्यक्ति पर यदि अच्छा प्रभाव पड़ता है तो उसे धनात्मक वाह्यता कहते हैं।

उदा०:- वृक्ष लगाने से आक्सीजन मिलते हैं जिससे लोगों की बीमारियाँ कम होती हैं।

यह दो प्रकार की होती हैं।

① ~~धनात्मक~~ धनात्मक उत्पादक वाह्यता
② ~~ऋणात्मक~~ धनात्मक उपभोक्ता वाह्यता

② **ऋणात्मक वाह्यता :-** किसी वस्तु के उत्पादन से तीसरे व्यक्ति पर बुरा प्रभाव पड़ता है तो उसे ऋणात्मक वाह्यता कहते हैं -

उदा०: वस्तु के उत्पादन से निकलने वाला धुआँ।

यह भी दो प्रकार की होती हैं :-

① ऋणात्मक उत्पादक वाह्यता
② ऋणात्मक उपभोक्ता वाह्यता

Paper Code
A 0 8 0 1 0 1 T

8

Do Not Write anything in this Portion

प्रश्नोत्तर क्रमांक : 1 (A)

वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत

वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत वस्तु के उत्पादन के फलस्वरूप उत्पादन के साधन के वितरण हिस्से या साधन के पारिश्रमिक से संबंधित होती है।

उत्पादन के साधनों के पारिश्रमिक वहाँ पर निर्धारित होता है जहाँ पारिश्रमिक सीमांत उत्पादकता के बराबर हो जाता है।

अल्पकाल में मांग व पूर्ति से यह परिवर्तित हो सकता है परंतु दीर्घकाल में यह परिवर्तित नहीं होता है।

सीमांत उत्पादकता को अर्थशास्त्रियों ने तीन प्रकार का बताया है।

① सीमांत भौतिक उत्पादकशीलता
② सीमांत आगम उत्पादनशीलता
③ सीमांत मूल्य उत्पादनशीलता

सीमांत भौतिक उत्पादनशीलता एक अतिरेक उत्पादन के साधन के प्रयोग से होने वाले उत्पादन को कहते हैं जबकि एक अतिरेक उत्पादन से जो आगम आता है वह सीमांत आगम उत्पादनशीलता कहलाते हैं।

Paper Code A080101 7

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 1(i)

सामाजिक कल्याण

कल्याण:- कल्याण शब्द से आशय है कि वस्तु के उपभोग से जो संतुष्टि प्राप्त होती है उसका स्तर उच्च होना।

प्रो॰रेडर के अनुसार, कल्याण अर्थ विज्ञान की वह धारणा है जो आर्थिक नीतियो के मानदण्ड की स्थापना करता है या प्रयोग करने का प्रयत्न करता है।

सामाजिक कल्याण की अवधारणा ~~पीगू~~ परेटो ने दी थी.

इसमें बताया गया है कि यदि कोई व्यक्ति श्रेष्ठ स्तर पर जाना चाहता है तो उसे किसी व्यक्ति को हानि पहुंचानी संभाव है परंतु सामाजिक कल्याण सभी के कल्याण की बात करता है।

परेटो मानदण्ड:- परेटो मानदण्ड यह कहता है कि यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य को हानि पहुँचाए बिना श्रेष्ठतर स्तर पर पहुँच जाता है तो वह समाज कल्याणकारी होगा।

इस प्रकार समाज कल्याण केवल एक व्यक्ति का व्यक्तिगत रूप से कल्याण की बात नहीं करता अपितु पुरे समाज के कल्याण की सामूहिक रूप से बात करता है।

Do Not Write anything in this Portion

(खण्ड - ब)

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 2

माँग की लोच :- माँग की लोच से आशय है कि किसी वस्तु की माँग में कितना परिवर्तन हुआ है। अर्थात माँग का नियम बताता है कि वस्तु की माँग में क्या परिवर्तन हुआ है जबकि माँग की लोच बताती है कि क्या परिवर्तन हुआ है। यह 3 प्रकार की होती है।

1) माँग की कीमत लोच
2) माँग की आय लोच
3) माँग की आड़ी लोच

माँग की कीमत लोच

माँग की कीमत लोच का अर्थ है कि किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन करने पर उसकी माँग में कितना आनुपातिक परिवर्तन हुआ है।

$$\text{माँग की लोच} = \frac{\text{माँग में आनुपातिक परिवर्तन}}{\text{कीमत में आनुपातिक परिवर्तन}}$$

यदि किसी वस्तु की कीमत P से P_1 कर दी जाती है तथा उसकी माँग Q से Q_1 हो जाती है अर्थात यदि कीमत में आनुपातिक परिवर्तन ΔP है तथा माँग में आनुपातिक परिवर्तन

$\frac{\Delta Q}{Q}$ है तब -

माँग की कीमत लोच $e = \frac{\frac{\Delta Q}{Q}}{\frac{\Delta P}{P}}$

$= \frac{\Delta Q}{Q} \times \frac{P}{\Delta P}$

$$e = \frac{\Delta Q}{\Delta P} \times \frac{P}{Q}$$

माँग की कीमत लोच की श्रेणियाँ

माँग की कीमत लोच की श्रेणियाँ निम्न प्रकार हैं।

(1) लोचदार माँग $e = 1$
(2) बेलोचदार माँग $e < 1$
(3) अधिक लोचदार माँग $e > 1$
(4) पूर्णतया बेलोचदार माँग $e = 0$
(5) पूर्णतया लोचदार माँग $e = \infty$

(1) **लोचदार माँग** :- यदि किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने से उसकी माँग में भी उतना ही परिवर्तन होता है तो उसे लोचदार माँग कहते हैं।

इसके लिए $e = 1$ होता है।

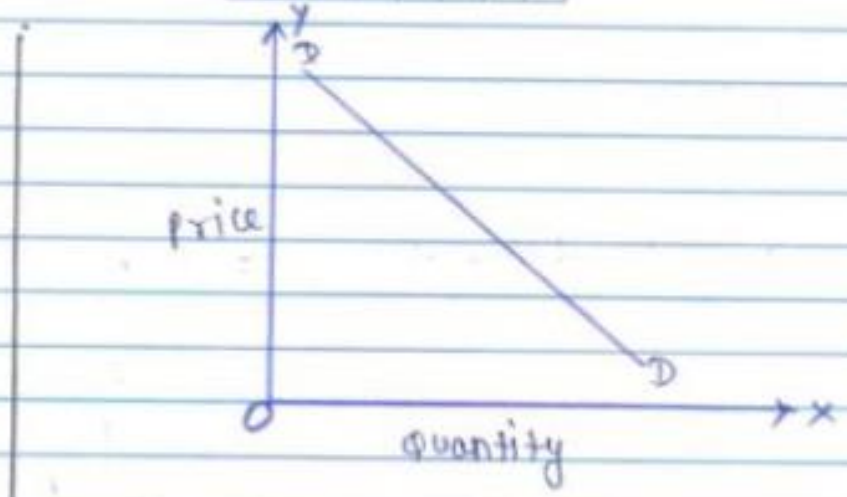

माँग व बेलोचदार माँग:- यदि वस्तु की कीमत मे परिवर्तन करने पर माँग मे परिवर्तन कीमत परिवर्तन से कम होता है तो उसे बेलोचदार माँग कहते हैं।

इसके लिए $e<1$ होता है।

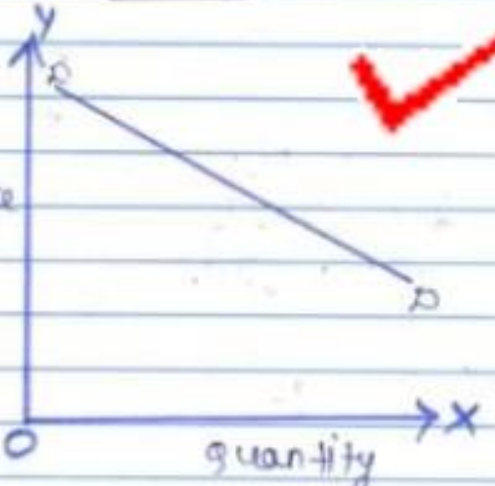

अधिक लोचदार माँग:- यदि वस्तु की कीमत मे परिवर्तन करने पर माँग मे कीमत परिवर्तन से अधिक परिवर्तन होता है तो उसे अधिक लोचदार माँग कहते हैं।

Do Not Write anything in this Portion

इसके लिए $e > 1$ होता है।

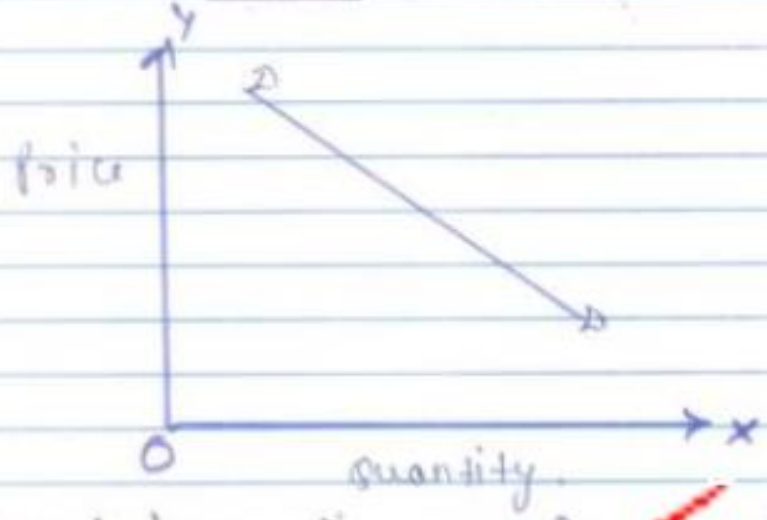

पूर्णतया बेलोचदार माँग :- यदि कीमत में परिवर्तन करने पर माँग में कोई परिवर्तन नहीं होता है तो उसे पूर्णतया बेलोचदार माँग कहते हैं।

इसके लिए $e = 0$ होता है।

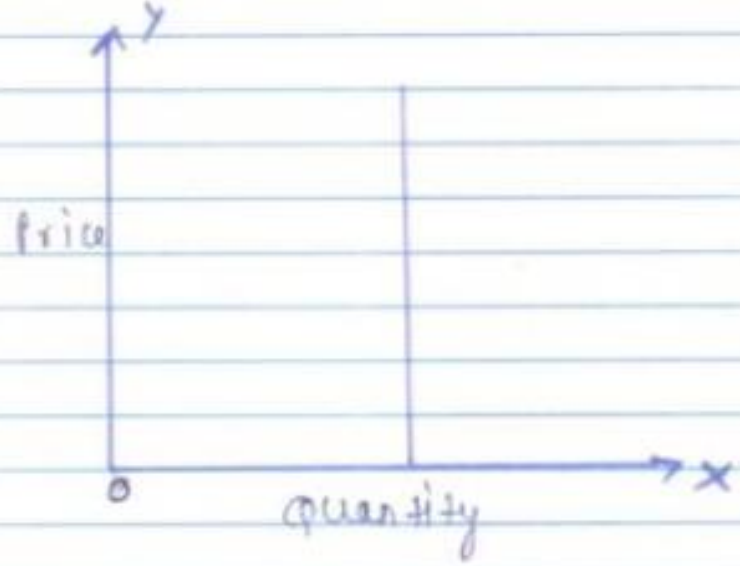

अधिक पूर्णतया लोचदार माँग :- यदि किसी वस्तु की कीमत में कोई

Do Not Write anything in this Portion

न करें फिर भी उसकी माँग में परिवर्तन होता है तो उसे पूर्णतया लोचदार माँग कहते हैं।

इसके लिए $e = \infty$ होता है।

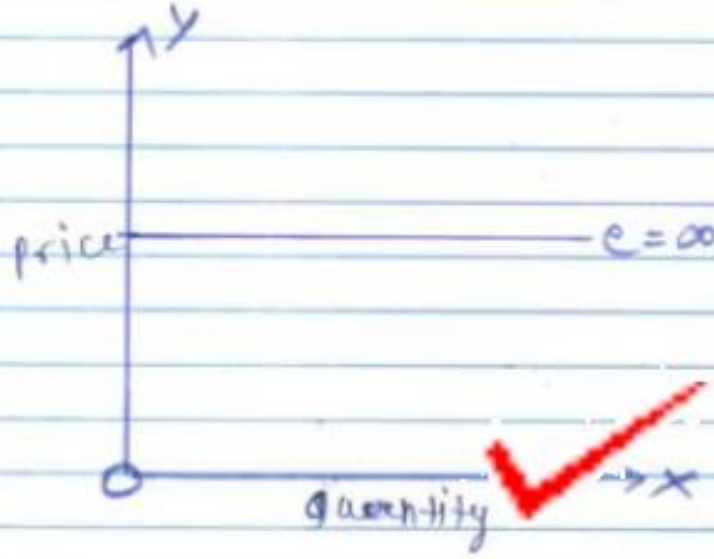

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 8 (खण्ड - स)

मजदूरी

किसी व्यक्ति द्वारा अपने श्रम को अन्य व्यक्तियों को धन के बदले बेचना मजदूरी कहलाती है। अर्थात यदि कोई व्यक्ति जो बेरोजगारी से मुक्त होने के लिए अपने श्रम को दूसरे व्यक्ति के हाथों धन या अर्थ के बेचता है उसे मजदूरी कहते हैं।

दूसरे शब्दों में, श्रम का प्रतिफल मजदूरी कहलाता है।

~~श्रम~~ मजदूरी की माँग

जब कोई उत्पादक अपनी फैक्ट्री में किसी वस्तु का उत्पादन करता है तो उसे उत्पादित के साधनों की आवश्यकता पड़ती है जिसमें भूमि, श्रम, पूंजी तथा साहस आते हैं। श्रम के लोगों को ढूंढना आसान है और कुछ जगहों पर इसकी माँग भी अधिक होती है। श्रम की माँग निर्भर करती है उस फैक्ट्री के आकार पर।

श्रम के बदले में जो आर्थिक लाभ होता है उसे मजदूरी कहते हैं। मजदूरी की माँग उच्च स्तर होती है। मजदूरी एक ऐसा आर्थिक लाभ है जिसमें व्यक्ति उत्पादित के साधनों में श्रम का प्रयोग करता है। वैसे मजदूरी का आधुनिक सिद्धांत भी करते हैं।

चित्र द्वारा निरूपण :-

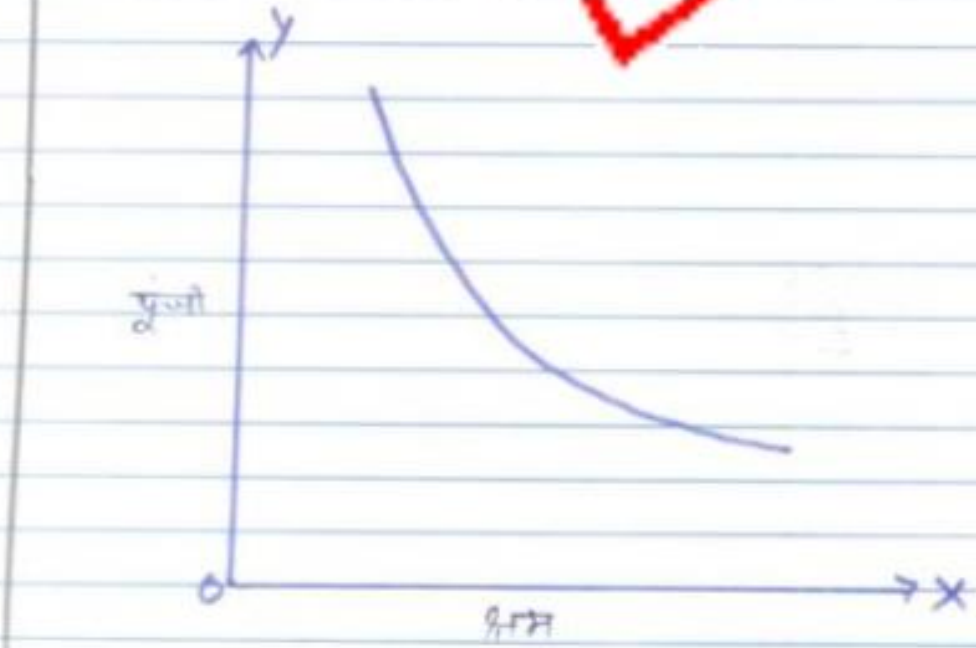

श्रम की पूर्ति

यदि श्रम की मांग उच्च स्तर पर होती है। परंतु श्रम की पूर्ति उस स्तर पर नहीं होती है तब तो बेरोजगारी उत्पन्न नहीं होती है परंतु यदि श्रम की पूर्ति अधिक या उच्च स्तर पर है परंतु श्रम की मांग उतनी नहीं है तो बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न हो जाती है।

श्रम की मांग के अनुसार श्रम की पूर्ति का निर्धारण किया जाता है। श्रम की मांग तथा पूर्ति के द्वारा ही किसी व्यक्ति की मजदूरी का निर्धारण किया जाता है।

श्रम की पूर्ति का ध्यान रखने से अर्थव्यवस्था में भी परिवर्तन पड़ता है।

ग्राफ द्वारा निरूपण :-

मजदूरी का निर्धारण

मजदूरी का निर्धारण श्रम और की माँग और पूर्ति पर ही निर्भर करता है। जहाँ पर श्रम की माँग वक्र ~~का~~ श्रम की पूर्ति वक्र को काटता है वहाँ पर मजदूरी का निर्धारण होता है जिसे चित्र द्वारा समझ सकते हैं।

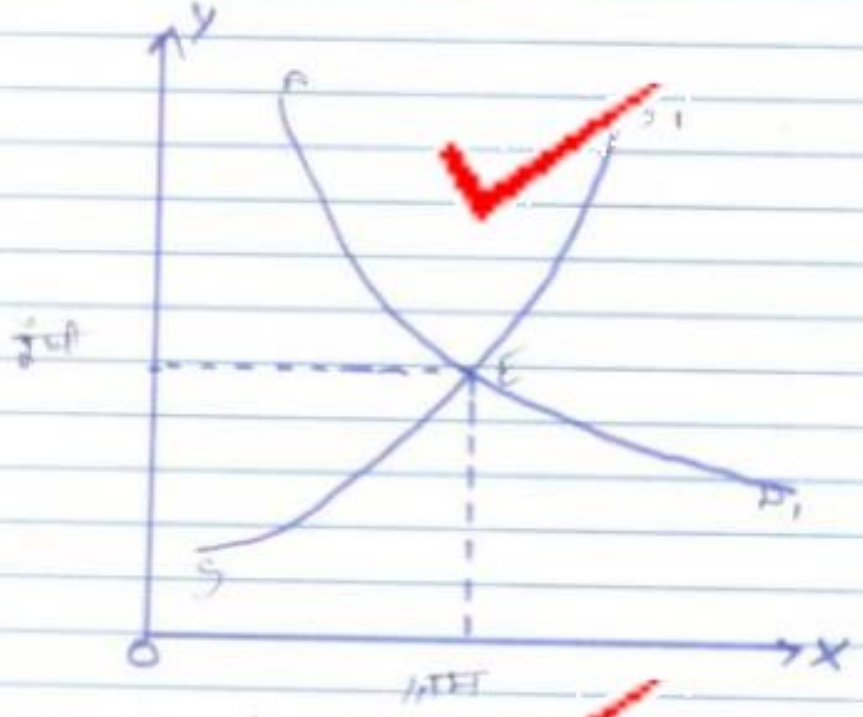

जैसा कि चित्र से स्पष्ट है कि श्रम की माँग रेखा या श्रम की माँग वक्र ऊपर से नीचे की ओर DD_1 है तथा श्रम की पूर्ति रेखा या श्रम की पूर्ति वक्र नीचे से ऊपर की ओर SS_1 है तो इसके कटान बिंदु अर्थात जहाँ पर श्रम की माँग वक्र DD_1 तथा पूर्ति वक्र SS_1 काटता है वहाँ पर मजदूरी का निर्धारण होता है।

श्रम की माँग व पूर्ति द्वारा मजदूरी का निर्धारणबिंदु = E

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code
A 0 0 0 1 0 1 T

उत्तर: किसी व्यक्ति की मजदूरी का निर्धारण का किसी फर्म द्वारा मजदूरी का निर्धारण श्रम की मांग तथा श्रम की पूर्ति के निर्धारक करण बिंदु से होता है

Paper Code

Paper Code

20

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

21

X

X

Paper Code

22

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

23

X

Paper Code

24

Do Not Write anything in this Portion

X